Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.29-32

व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. डी. पी. मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
के.एन.आई.पी.एस.एस. सुलतानपुर उत्तर–प्रदेश भारत।

प्रस्तावना–
प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में समय–समय पर क्रोध, भय, हर्ष घृणा, प्रेम, वासना, क्षोभ, आश्चर्य, करूणा, दया आदि भावों का अनुभव करता है। इन्हें ही मनोवैज्ञानिक भाषा में संवेग कहा जाता है। मानव जीवन में संवेगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इनसे व्यक्ति को कार्य करने की शक्ति एवं प्रेरणा प्राप्त होती है। संवेगो के उदय होने पर व्यक्ति में अतिरिक्त ऊर्जा एवं शक्ति का संचार होता है जो कार्य सामान्य स्थिति में उसके लिए सम्भव नहीं थे, उन्हीं असम्भव से दिखाई देने वाले कार्यों को वह संवेगावस्था में बड़ी सरलता से कर डालता है। संवेगों का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के भावात्मक पक्ष से होता है। सुखद वस्तु को देखकर हर्षित होना, डरावनी वस्तु को देखकर डर जाना, इच्छा विरूद्ध कार्य होने पर क्रोधित होना, खराब वस्तु देखकर घृणा करना आदि संवेगात्मक स्थिति के कुछेक उदाहरण है। संवेगों के उदित होने पर व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक स्थिति में परिवर्तन आ जाता है। वास्तव में संवेग मानसिक उपद्रव की अवस्था को प्रदर्शित करते हैं। जिसमें व्यक्ति अपनी सामान्य स्थिति में नहीं रहता तथा उसके व्यवहार पर बुद्धि एवं विवेक का अंकुश समाप्त हो जाता है। फलतः वह उचित–अनुचित की सीमा रेखा को भूलकर व्यवहार करने लगता है, संवेगाश्रित हो व्यक्ति एक तरफ प्रशंसनीय व साहसिक कार्य करने लगता है तो दूसरी ओर संवेग के अति प्रभाव के कारण वह निन्दनीय तथा पशुवत व्यवहार भी कर जाता है।

मुख्य शब्द– संवेगात्मक, व्यवसायिक शिक्षा, सामान्य शिक्षा

आज के चकाचौंध युक्त भौतिकता प्रधान वातावरण में व्यक्ति निरन्तर तनावग्रस्त होता जा रहा है। जिसका बहुत कुछ कारण उसका सीमा रहित व असंतुलित संवेग प्रदर्शन है। वस्तु आग्रही सोच और जटिल जीवन परिस्थितियाँ उसे संवेगातिरेक व्यवहार प्रदर्शन करने हेतु बाध्य करती हैं जिसके कारण उसमें तनाव, चिन्ता, अन्तर्द्वन्द, कुण्ठा आदि का जन्म होता है। बदलते सामाजिक व्यवहार प्रतिमान और आवश्यकता से अधिक खुलापन सांवेगिक उपद्रव को बढ़ाकर उसके समायोजनात्मक व्याकरण को बिगाड़ रहे हैं। जिसके फलस्वरूप उसका शारीरिक मानसिक व सामाजिक विकास उचित तरीके से नहीं हो पा रहा है। जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु संवेगात्मक समायोजन एक अति आवश्यक कारक है। संवेगात्मक समायोजन से व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य समुन्नत रहता है , उसका दृष्टिकोण उदार बनता है। उसके पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्ध मधुर बनते हैं और वह सफलता के नये आयाम स्थापित करता है। जबकि संवेगात्मक असमायोजन व्यक्ति के व्यवहार में उतावलापन , असंयम और भीरूता को जन्म देता है जिससे उनमें अपनी सफलता के प्रति शंका और डर उत्पन्न होता है। कभी–कभी वे संवेगो के वशीभूत हो जघन्य असमाजिक कृत्य भी कर बैठते हैं। अतः आवश्यक है कि व्यक्ति के संवेगो का उचित प्रशिक्षण एवं परिमार्जन कर उन्हें परिपक्व संवेगात्मक व्यवहार हेतु प्रेरित किया जाय जिससे कि उनकी समायोजन क्षमता में वृद्धि हो और वे अपने जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति सफलता पूर्वक कर सकें।

शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

1. **व्यवसायिक पाठ्यक्रम–** यह एक विशिष्ट अथवा विशेषीकृत अध्ययन होता है। जो अध्येयता में प्रमाणिक व्यवसायिक कृत्य करने की योग्यताएँ विकसित करता है, जैसे– कानूनी शिक्षा का पाठ्यक्रम, चिकित्सा, प्रबन्धन व अभियंत्रण शिक्षा का पाठ्यक्रम आदि।
2. **सामान्य शिक्षा का पाठ्यक्रम**– इसे गैर व्यवसायिक शिक्षा अथवा उदार शिक्षा का पाठ्यक्रम भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति अपनी नौकरी व व्यवसाय से सम्बन्धित सामान्य जानकारी अर्जित करता है, जिससे कि वह सफलतापूर्वक नागरिक जीवन जी सके जैसे–

बी0ए0, एम0ए0, बी0काम0 एम0काम0 आदि का पाठ्यक्रम ।

3. **संवेगात्मक समायोजन–** संवेगात्मक समायोजन से तात्पर्य श्रेष्ठ व अभिनंदनीय संवेगो के विकास व सन्तुलन से है जिससे कि व्यक्ति अपने संवेगात्मक व्यवहार को उचित दिशा प्रदान कर समुन्नत शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य अर्जित कर सके।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व– व्यवसायिक तथा समान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित अधिकांश छात्र–छात्राएँ किशोरवय के होते हैं। इन किशोर–किशोरियों में शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक परिवर्तन इनते तीव्र होते हैं कि उन्हें स्वयं इन बदलाओं के साथ सामंजस्य बैठा पाना काफी कठिन हो जाता है , जो उनमे तनाव व उलझनों को जन्म देते हैं। आज, जिस तरह से शहर और गाँव में रिश्ते–नाते, रहन–सहन, खान–पान का व्याकरण तेजी से परिवर्तित हो रहा है। वहाँ यह देखने की फुरसत किसे है कि अपने ही घरों में रहने वाले लड़के–लड़कियाँ जो विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं, किस प्रकार की मनः स्थिति, उलझनों व तनावों में फंसे रहते हैं। सुरक्षित भविष्य की चिन्ता विद्यार्थी जीवन की सामान्य विशेषता होती है जिसे प्राप्त करने हेतु वे निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। इस प्रयत्नशीलता के अन्तर्गत ही वे व्यवसायिक अथवा सामान्य शिक्षा प्राप्त करते हैं किन्तु प्रतिस्पर्धा का बढ़ता दायरा शिक्षा के स्वरूप व साधनों में होने वाला तीव्र परिवर्तन उनके विद्यार्थी जीवन को असहज व कठिन बनाकर उनमें तनाव का संचार कर रहा है। परिणामतः उनमें सांवेगिक उथल–पुथल बहुत तेजी से हो रही है और उनका भावनात्मक समायोजन बुरी तरह से कुप्रभावित हो रहा है वे परिस्थितियों के सामने हथियार डालते जा रहे हैं। कुछ तनाव भीरू छात्र तो तनाव के हल्के झोंके से ही डर कर अपनी जीवन लीला तक समाप्त कर ले रहे हैं। यथार्थ में देखा जाय तो आज सभी विद्यार्थी चाहे वे व्यवसायिक शिक्षा के हो अथवा सामान्य शिक्षा वर्ग के हों सभी कमोवेश संवेगात्मक असंतुलन व तनाव के प्रसार का सामना कर रहे है जो हर लिहाज से विद्यार्थियों के लिए घातक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों में संवेगात्मक कुसमायोजन को रोकने तथा उनकी सांवेगिक समस्याओं का उचित समाधान कर उनमें समायोजनशीलता का गुण विकसित करने का एक सार्थक प्रयत्न है जिससे की वे सफल विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर भविष्य में श्रेष्ठ नागरिक बन सकें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र और छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

   1.1 व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

   1.2 व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

1. व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र और छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.1 व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.2 व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है जिससे कि शोध समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरों के पारस्परिक सम्बन्धों की जाँच पड़ताल कर विश्वसनीय निष्कर्ष निकाले जा सकें।

शोध अध्ययन की जनसंख्या– प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतापगढ़ जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत 100 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक–न्यादर्श प्रतिचयन विधि से चयनित किया गया है। जिनमें 50 व्यवसायिक पाठ्यक्रम से (25 छात्र + 25 छात्राएँ) तथा 50 सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम से (25 छात्र + 25 छात्राएँ) सम्मिलित हैं।

प्रयुक्त शोध उपकरण एवं सांख्यिकीय विधियाँ– प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ0 ललिता शर्मा विभागाध्यक्षा गृह विज्ञान, डी0डी0 महाविद्यालय फिरोजाबाद (उ0प्र0) द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है। साथ ही संकलित प्रदत्तों के सार्थक विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–अनुपात तथा आवश्यकतानुसार अन्य सांख्यिकीय विधियाँ प्रयुक्त की गयी हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी नम्बर –01

व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण–

समूह	न्यादर्श का आकार N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर D=M1-M2	मानक त्रुटि	टी–मान	सारणीमान 0.5 स्तर पर
सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र तथा छात्राएं	50	64.20	10.65	6.04	2.11	2.86	1.98
व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र तथा छात्राएँ	50	58.16	10.40				df 98

प्रस्तुत सारणी में व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 2. 86 प्राप्त हुआ जबकि मुक्तांश (df) 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी– अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात परिगणित टी– अनुपात का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 01 अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में नांमांकित छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

सारणी–1.1

व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के संवेगात्मक समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण –

समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर D=M1-M2	मनक त्रुटि	टी–मान	सारणीमान 0.5 स्तर पर
सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र	25	60.68	8.64	5.88	2.16	2.72	2.02
व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र	25	54.80	6.52				df 48

प्रस्तुत सारणी 1.1 में व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानो के अन्तर का टी– अनुपात 2.72 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश (df) 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर सारणी मान 2.02 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 1. 2 अस्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

सारणी–1.2

व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण–

समूह	न्यादर्श का आकार N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर D=M1-M2	मनक त्रुटि	टी–मान	सारणीमान 0.5 स्तर पर
सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राएं	25	63.60	6.56	5.97	2.02	2.95	2.02
व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राएँ	25	57.63	7.68				df 48

प्रस्तुत सारणी 1.2 में व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी– अनुपात 2.95 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश (df) 48 पर तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर सारणी मान 2.02 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 1. 2 अस्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि व्यवसायिक तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष– शोधार्थी ने अपने अध्ययन में व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों में संवेगात्मक समायोजन का स्तर न्यून पाया जिसका कारण व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रतिस्पर्धा का बढ़ता दायरा व्यवसायिक शिक्षा के स्वरूप व साधनों में होने वाला तीव्र परिवर्तन उनके कार्य को कठिन व असहज बनाकर उनमें संवेगात्मक कुसमायोजन का संचार कर रहा है। छात्रों की तुलना में छात्राओं के सांवेगिक संतुलन का स्तर भी कम पाया गया इसके सम्भावित कारणों में उनका कार्य के प्रति अधिक संजीदगी छात्रों की तुलना में बाहरी दुनिया से कम सम्पर्क होना जिससे उन्हें अपने संवेगो के शोधन, परिमार्जन व मार्गान्तरीकरण के अवसर कम प्राप्त होते है। सामान्य शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही छात्राओं के पारस्परिक समायोजन स्तर में भी भिन्नता दृष्टिगोचित हुई। तुलनात्मक रूप में सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में नामांकित छात्राएँ अधिक परिपक्व व प्रशिक्षित संवेगात्मक व्यवहार प्रकट करती हैं, इसके प्रमुख सम्भावित कारणों में सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में सामाजिक विषयों की प्रधानता जिसके अध्ययन से उनमें सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है साथ ही सामान्य शिक्षा का पाठ्यक्रम सरल व रोचक होता है जबकि व्यवसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम कठिन व उबाऊ होता है। परिणामतः सामान्य शिक्षा ग्रहण कर

रही छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन व्यवसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही छात्राओं से ज्यादा देखा गया । इस प्रकार सारांशतः कहा जा सकता है कि सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का सरल होना, प्रतिस्पर्धा की कमी व्यक्तिगत प्रदर्शन का कम दबाव आदि ऐसे अनेक उत्तरदायी कारक है जो सामान्य शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समायोजनशीलता में वृद्धि करते हैं जबकि ठीक इसके विपरीत व्यवसायिक पाठ्यक्रम का पदार्थवादी तकनीकी स्वरूप उसे जटिल बनाकर इसे पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं में दबाव तनाव का संचार कर उनकी संवेगात्मक समायोजनशीलता को नकारात्मक रूप में प्रभावित करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मिश्र के0 एस0 : कान्सेप्ट , मेजर मेण्ट ऑफ सोसल एण्ड इमोशनल मेच्योरिटी अमिताभ प्रकाशन इलाहाबाद ।
2. गुप्ता, एस0 पी0 : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
3. पाण्डेय के0पी0 : शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी ।
4. सिंह अरूण कुमार : मनोविज्ञान , समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन नई दिल्ली ।
5. सारस्वत मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूप रेखा आलोक प्रकाशन लखनऊ।
6. गुप्ता मनमथ नाथ : यौन मनोविज्ञान साहित्य परिवार राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली ।
7. गुप्ता, एस0 पी0 : व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।
8. शर्मा आर0ए0 : शिक्षा अनुसंधान, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ ।